गुरु नानक – सबद १८

पंच परवाण पंच प्रधानु ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ३

पंच परवाण पंच प्रधानु ॥
पंचे पावहि दरगहि मानु ॥
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥
पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥
जे को कहै करै वीचारु ॥
करते कै करणै नाही सुमारु ॥
धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥
जे को बुझै होवै सचिआरु ॥
धवलै उपरि केता भारु ॥
धरती होरु परै होरु होरु ॥
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥
जीअ जाति रंगा के नाव ॥
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥
लेखा लिखिआ केता होइ ॥
केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥
केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥
कीता पसाउ एको कवाउ ॥
तिस ते होए लख दरीआउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

सार: सृष्टि में पाँच मूल तत्व शामिल हैं - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और अंतरिक्ष; जो भौतिक संसार का निर्माण करते हैं। सृष्टि पाँच आवरणों के माध्यम से अस्तित्व को अनुभव करती है। भौतिक रूप का आवरण, जीवन ऊर्जा की शक्ति का आवरण, शारीरिक व्यवहार का आवरण, बुद्धि का आवरण और आनंद का आवरण। इन सभी पहलुओं को समझने से जागरूकता के मूल से उच्चतम पहलू तक पार करना संभव हो जाता है। जो इस समझ की ओर ले जाता है कि संपूर्ण सृष्टि का निर्माण एक ही विलक्षणता का उत्पाद है।

पंच परवाण पंच प्रधानु ॥

पाँच तत्वों को किसी भी भौतिक रूप के पाँच प्रधान मूल स्रोतों के रूप में स्वीकृत किया गया है; वह रूप जो एकता का प्रतीक हैं उन्हें सर्वोच्चता की अत्यंत अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

पंचे पावहि दरगहि मानु ॥

भौतिक रूप, पांच तत्वों का मिश्रण, जो एकता का अभ्यास करता है, दिव्य निवास के रूप में सम्मान के योग्य है।

पंचे सोहहि दरि राजानु ॥

पाँच तत्वों का मिश्रण, भौतिक रूप, जो पाँच कोशों को सँभालने में सक्षम है, वह गुणवान व्यक्ति सर्वोच्च पद के योग्य है।

पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥

एकजुटता पर चिंतन मानवीय अस्तित्व के पांच आवरणों को दुई के अंधेरे से एकता के प्रकाश में बदलने के लिए मार्गदर्शक शक्ति है।

जे को कहै करै वीचारु ॥

अगर कोई वर्णन करने या विचार करने का प्रयास करता है।

करते कै करणै नाही सुमारु ॥

सृष्टिकर्ता के द्वारा प्रकट की गई रचनाओं का बयान, शब्दों से बाहर है।

धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥

सच्चाई और नेकी वो शक्तियां हैं जो करुणा से पैदा होती हैं।

संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥

सद्गुण को वह धारण करते हैं जो प्रकृति के नियम के अनुसार संतोष का पालन करते हैं।

जे को बुझै होवै सचिआरु ॥

जो इस सिद्धांत को समझते हैं उन्हें सत्य का एहसास होता है।

धवलै उपरि केता भारु ॥

सच्चाई बोझ कैसे हो सकती है?

धरती होरु परै होरु होरु ॥

इस क्षेत्र (पृथ्वी) के दायरे के अलावा और भी बहुत कुछ है।

तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥

वह कौन सी शक्ति है जो उनके अस्तित्व को कायम रखती है?

जीअ जाति रंगा के नाव ॥

प्रकृति में असीमित विविधता है, हर एक की अपनी विशिष्टता और जागरूकता है।

सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥

अस्तित्व का लगातार बहाव एक सर्वव्यापी चेतना से पैदा होता है, जो प्रकृति के नियमों के अनुसार स्वयं को विविध रूपों में व्यक्त करता है।

एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥

अस्तित्व के विस्तार का लेखा-जोखा किसके पास है जो इसका हिसाब कर सके?

लेखा लिखिआ केता होइ ॥

अस्तित्व के विस्तार को कैसे दस्तावेज़ किया जा सकता है?

केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥

प्रकृति के सभी रूपों पर की गई कृपा सराहनीय है।

केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥

सृष्टिकर्ता की निर्मित प्रकृति में बहुतायत का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

कीता पसाउ एको कवाउ ॥

एक विलक्षण सत्ता वाली हस्ती की आज्ञा से ही इस व्यापक सृष्टि का निर्माण हुआ है।

तिस ते होए लख दरीआउ ॥

इस एक विलक्षण इकाई के माध्यम से विविधता की असीमित धाराएँ बहती हैं।

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

प्रकृति की शक्ति को कैसे समझा जा सकता है?

वारिआ न जावा एक वार ॥

इसकी विशालता को एक पल के लिए भी समेटा नहीं जा सकता।

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

जो कुछ भी प्रकृति द्वारा निर्धारित है वह कल्याण के लिए उत्कृष्ट है।

तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

सर्वव्यापी चेतना अनंत और निराकार है। (१६)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि सृष्टि की एकता और जुड़ाव को समझने के लिए पाँच तत्वों, पाँच इंद्रियों और पाँच आवरणों की बाधाओं को पार करना मानव अस्तित्व की सर्वोच्चता का प्रतीक है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com